उत्तर प्रदेश का प्राचीन इतिहास

यूपी स्पेशल की श्रृंखला के इस लेख में हम उत्तर प्रदेश के प्राचीन इतिहास के बारे में पढ़ेंगे। यह न केवल व्यावहारिक होगा बल्कि अंतिम मिनट के त्वरित पुनरीक्षण के लिए सहायक होगा। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास पर कल और परसों एक लेख होगा।

- उत्तर प्रदेश में ताम्र-पाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य **मेरठ और सहारनपुर** से प्राप्त हुए है।
- उत्तरप्रदेश में पुरापाषाण कालीन सभ्यता के साक्ष्य **इलाहाबाद के बेलन घाटी**, **सोनभद्र के सिंगरौली घाटी** तथा **चंदौली के चकिया नामक** पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं।
- बेलन नदी घाटी के पुरास्थलों की खोज एवं खुदाई इलाहाबाद विश्वविद्यालय के **प्रोफेसर जी-आर- शर्मा** के निर्देशन में कराई गई।
- बेलन घाटी के 'लोहदानाला' नामक पुरास्थल से पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक **अस्थि-निर्मित मातृ देवी** की प्रतिमा भी प्राप्त हुई है।
- मध्य पाषाणकालीन मानव अस्थि-पंजर के कुछ अवशेष प्रतापगढ़ के **सरायनाहर राय तथा महदहा** नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं।
- नवीनतम खोजों के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले में स्थित **लहुरादेव** है।
- यहां से **8000 ई-पू- से 9000 ई-पू- के मध्य चावल** के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- मिर्जापुर, सोनभद्र, बुंदेलखंड एवं प्रतापगढ़ के सराय नाहर राय से उत्खनन **में नवपाषाण काल के औजार एवं हथियार** मिले हैं।
- आलमगीरपुर से हड़प्पाकालीन वस्तुएं प्राप्त हुई हैं, यह हड़प्पा सभ्यता के **पूर्वी बिस्तार** को प्रकट करता है। यहां से **कपास उपजाने के साक्ष्य भी प्राप्त** हुए हैं।
- 16 महाजनपदों में से 8 महाजनपद मध्य देश (आधुनिक उ-प्र-) में स्थित थे, जिनके नाम थे- **कुरू, पांचाल, काशी, कोशल, शूरसेन, चेदि, वत्स और मल्ल।**
- **कुशीनगर पर हूणों के आक्रमण** के भी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- **कुशीनगर में 483 ई-** पू- में गौतम बुद्ध को **महापरिनिर्वाण** की प्राप्ति हुई थी।
- कालसी (वर्तमान उत्तराखण्ड) में **अशोक का चौदहवां शिलालेख** प्राप्त हुआ हैं। यहां से संस्कृत पदों से उत्कीर्ण ईटों की एक वेदी मिली है जो तृतीय शती ई- के शासक **शीलवर्मन के अश्वमेघ यज्ञ स्थल** का साक्ष्य है।
- गौतम बुद्ध का अधिकांश संन्याशी जीवन उत्तर प्रदेश में ही व्यतीत हुआ था। इसी कारण उत्तर प्रदेश को **'बौद्ध धर्म का पालना** कहते है
- गौतम बुद्ध ने सर्वाधिक वर्षा काल **कोशल राज्य** में व्यतीत किए थे।
- **चेदि महाजनपद** की राजधानी शुक्तिमती (बांदा के समीप) थी।
- **अयोध्या का प्राचीन नाम अयाज्सा** था।
- बौद्ध परंपरा के अनुसार **अशोक ने एक स्तूप** का निर्माण **अयोध्या** में कराया था।
- जैन ग्रंथों के अनुसार आदिनाथ सहित **पांच तीर्थंकारों की जन्मभूमि अयोध्या** थी।
- **अहिच्छत्र से 'मित्र' उपाधि वाले राजाओं के सिक्के (200-300 ई-) प्राप्त हुए हैं।**
- अहिच्छत्र से गुप्तकालीन **'यमुना' की एक मूर्ति** प्राप्त हुई है।

- पुष्यभूति शासक हर्षवर्द्धन के काल (606-647 ई-) में कन्नौज नगर **'महोदयश्री'** अथवा **'महोदय नगर'** भी कहलाता था। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कन्नौज को **'महादेव'** बताया गया है।
- कन्नौज पर आधिपत्य के लिए **गुर्जर-प्रतिहारों, पालों एवं राष्ट्रकूटों** के मध्य दीर्घकालीन त्रिकोणीय संघर्ष हुआ था।
- सर्वाधिक समय तक **कन्नौज पर गुर्जर-प्रतिहारों** ने शासन किया था।
- **1018-1019 ई**- में महमूद गजनवी ने **कन्नौज पर** आक्रमण किया था।
- अहरौरा (मिर्जापुर) से **अशोक का लघु शिलालेख** तथा **सारनाथ (वाराणसी) एवं कौशाम्बी (इलाहाबाद के समीप) से लघु स्तंभ-लेख** मिला है।
- अशोक की राजकीय घोषणाएं जिन स्तंभों पर उत्कीर्ण हैं, उन्हें **'लघु स्तंभ-लेख' कहा जाता है।**
- सांची एवं सारनाथ के **लघु स्तंभ-लेख में** अशोक अपने महामात्रें को संघ भेद रोकने का आदेश देता है।
- प्रयाग स्तंभ पर अशोक की रानी **करूवाकी द्वारा दान दिए जाने का उल्लेख** है। इसे **'रानी का अभिलेख'** भी कहा गया है।
- **काशी का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में** मिलता है। महाभारत के अनुसार इस नगर की स्थापना दिवोदास ने की थी। काशी महाजनपद की राजधानी वाराणसी थी।
- **गढ़वा (इलाहाबाद) में कुमारगुप्त प्रथम के दो शिलालेख तथा स्कंदगुप्त का एक शिलालेख प्राप्त हुआ है।**
- भितरी स्तंभ लेख (गाजीपुर) में पुष्यमित्रें और हूणों के साथ स्कंदगुप्त के युद्ध का वर्णन है।
- 1194 ई- में चंदावर के युद्ध में मुहम्मद गोरी ने गहड़वाल नरेश जयंचद (कन्नौज का शासक) को पराजित किया था।
- 1018 ई- मे महमूद गजनवी ने मथुरा के मंदिरों को ध्वंस कर लूटपाथ की थी।
- 1670 ई- में औरंगजेब ने मथुरा के कृष्ण मंदिर (वीर सिंह बुंदेला द्वारा निर्मित) को नष्ट किया था।
- अशोक ने सारनाथ में एक सिंह स्तंभ बनवाया था। इसी सिंह स्तंभ शीर्ष को स्वतंत्र भारत के राजचिन्ह के रूप में अपनाया गया है।